हिन्दी कथा साहित्य में
वृद्ध विमर्श

संपादक : डॉ. दिलीप मेहरा

ISBN - 978-81-950501-8-5

पुस्तक : हिन्दी कथा-साहित्य में वृद्ध विमर्श

संपादक : © डॉ. दिलीप मेहरा

प्रकाशक : उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

A-685 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर -208 021 (उ.प्र.)

Email : utkarshpublisherskanpur@gmail.com

Mob. : 8707662869, 9554837752

संस्करण : प्रथम, 2021

मूल्य : 1195/-

आवरण सज्जा : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : सार्थक डिजिटिल, कानपुर

Hindi Katha Sahitya Mein Vriddha Vimarsh

by : Dr. Dilip Mehra

Price : One thousand One hundred ninty five only.

अनुक्रम

कथा साहित्य

[illegible]
दीपक [illegible]
हिंदी कथा साहित्य : वृद्ध विमर्श की दृष्टि से
डॉ. दिलीप मेहरा
हिंदी दलित कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श
डॉ. [illegible]
हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श
डॉ. [illegible]
[illegible] कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श
डॉ. [illegible]
[illegible]
डॉ. [illegible]
समाज और साहित्य में वृद्धों की दयनीय स्थिति
डॉ. [illegible]
[illegible] के कथा-साहित्य में वृद्ध संदर्भ
डॉ. [illegible]

उपन्यास साहित्य

[illegible]
डॉ. [illegible] चंद मीणा
हिंदी उपन्यासों में वृद्धों के मृत्यु बोध से संबंधित चिंतन और उसका [illegible]
डॉ. [illegible] कुमार झा
हिंदी उपन्यासों में चित्रित वृद्धों के भुगतते जीवन
(विशेष संदर्भ : गिलिगडु, समय सरगम और अंतिम अरण्य)
डॉ. उषा मिश्रा
वृद्धजन्य केंद्रित प्रतिनिधि हिंदी उपन्यास
अंकित शर्मा
काशीनाथ सिंह के उपन्यासों में वृद्ध विमर्श
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह
[illegible]
डॉ. [illegible]
[illegible]
डॉ. [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
डॉ. दिलीप मेहरा
[illegible]
डॉ. [illegible]
वृद्धावस्था का यथार्थ चित्रण : अंतिम अरण्य
डॉ. [illegible]
वृद्धावस्था की [illegible]
डॉ. अमिता [illegible]
वृद्ध जीवन की पीड़ा का यथार्थ दस्तावेज : गिलिगडु
डॉ. [illegible]
[illegible] : वृद्ध जीवन के यथार्थ अनुभूति की अभिव्यक्ति
डॉ. [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
डॉ. [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
डॉ. [illegible]

[illegible] हिन्दी कहानी साहित्य में [illegible] वृद्ध [illegible]
डॉ. [illegible]
[illegible] की कहानियों में वृद्ध [illegible]
डॉ. [illegible]
[illegible] कहानियों में [illegible] की [illegible]
डॉ. [illegible]
[illegible] की [illegible]
डॉ. [illegible]
[illegible] खुलती वृद्ध संवेदना: सूर्यबाला की कहानियाँ
डॉ. [illegible]
[illegible] और मृदुला गर्ग की कहानियाँ
डॉ. अनु [illegible]
[illegible] सम्बन्ध और चित्रा मुद्गल
[illegible] दुबे
हिंदी कहानियों में झलकता वृद्धों का दर्द
डॉ. [illegible] परिहार

37. [illegible] की कहानियाँ : वृद्ध विमर्श के आइने में
डॉ. अनु मेहता 3(

38. डॉ. दिलीप मेहरा की कहानियों में वृद्ध विमर्श
वाघेला प्रियंका नारणभाई 3(

39. इक्कीसवीं सदी की कहानियों में वृद्धावस्था का सरोकार
शालिनी चौहान 31

40. इक्कीसवीं सदी की कहानियों में वृद्ध विमर्श : 'वाङ्मय' पत्रिका की कहानियों
परिप्रेक्ष्य में
डॉ. संगीता चौहान 32

41. धन्यकुमार बिराजदार की कहानियों में वृद्ध विमर्श
डॉ. स्मिता खंडप्पा सिताफले 3:

42. राजस्थान के हिंदी कहानी लेखन में वृद्ध विमर्श
डॉ. सुरेश सिंह राठौड़ 34

43. प्रवासी कथाकार सुषम बेदी की कहानियों में अभिव्यक्त वृद्ध स्त्री-जीवन
त्रासदी
अर्चना गुप्ता 35

44. हिन्दी कहानियों में वृद्ध विमर्श : 'वापसी' के संदर्भ में
डॉ. प्रीति भट्ट 36

[illegible] 'पिता' कहानी के संदर्भ में
डॉ. [illegible] 368

[illegible] कहानी '[illegible]'
[illegible] 373

[illegible] की कहानियाँ
[illegible] 379

48. '[illegible]' कहानी में वृद्ध [illegible]
[illegible] 38

49. वृद्ध विमर्श और '[illegible]'
डॉ. किरणसिंह जी. बारैया 3

50. 'बेटा' कहानी में व्यक्त वृद्ध विमर्श
डॉ. भावना ठक्कर

51. कलियुग की वृद्धावस्था का भयावह यथार्थ : साजिश
डॉ. संगीता चौहान

पिता-पुत्र के संबंधों का खुला आकाश : 'पिता' कहानी के संदर्भ में

डॉ. नीता त्रिवेदी

साहित्य मानवीय चेतना का प्रतिफलन है। मनुष्य में उसकी चेतना ही वह शक्ति है जिससे वह अपने परिवेश का मूल्यांकन करता है। डॉ. राम प्रसाद त्रिपाठी ने हिंदी विश्वकोश में चेतना को इसी रूप में प्रस्तुत किया है – "चेतना स्वयं को और अपने आसपास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है।"[1]

ऐसे ही अपने जीवन, अपने समाज से विषय लेकर अपनी भाषा की कसौटी पर संवेदनाओं का मूल्यांकन करने वाले, मानवीय चेतना को अपने साहित्य से पाठक के चित्त तक पहुंचाने वाले कथाकार हैं– ज्ञानरंजन। ज्ञानरंजन की पुस्तक के ब्लर्ब(परिचय) में लिखी बात एकदम सटीक है– "ज्ञानरंजन की कहानियाँ एक निर्विकार वस्तुपरक तरीके से और अपने खास कड़वे, कसैले, कामिकल स्वर में मध्यवर्ग की कोशिशों को उकेरती हैं। ... आज भी वे भीतर कोई–न–कोई मंथन, बहस या संवाद शुरू करती हैं तथा उनके सवालों, ख्यालों और आग्रहों में से कुछ आपकी जीवन दृष्टि का हिस्सा बनकर हमेशा साथ रह जाता है।"[2]

ज्ञानरंजन की ऐसी ही एक कहानी है– 'पिता' जो आज भी पाठकों के मनोजगत का एक हिस्सा है। मध्यमवर्गीय हर पिता की झलक इस कहानी के पिता में दिखाई देती है क्योंकि पीढ़ियों का अंतराल चिरकाल तक बना रहेगा। पीढ़ियों का यह द्वंद्व हर युग का हिस्सा है। ज्ञानरंजन ने अपनी भाषा के माध्यम से पिता नामक पात्र को पाठकों के हृदय में जीवंत कर दिया है। इस कहानी को पढ़ते समय सभी के मन में अपने पिता की छवि अवश्य उभर आती है जो ऊपर से कठोर बने रहते हैं किंतु सभी के सुख दुख से परिचित हैं। परिवार की सारी इच्छाएँ पूरी करते हैं किंतु अपनी इच्छाएँ कभी किसी को बताते तक नहीं हैं। बच्चों के जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप न करते हुए, अपनी जरूरतें कम करते हुए स्वाभिमानी एवं आत्मनिर्भर पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह

भी आज के वृद्ध विमर्श का एक नया दृष्टिकोण है। जहाँ बच्चे सक्षम हैं, वे पिता को सुविधाएं देना भी चाहते हैं किंतु पिता अपने बच्चों पर ज्यादा खर्च नहीं करना चाहते हैं। यह कहानी पुरानी और नई पीढ़ियों की परिवर्तित सोच एवं बदली हुई परिस्थितियों का चित्रण करती है।

पिता और पुत्र दोनों ही एक दूसरे का ख्याल रखते हैं। दोनों के मध्य एक अनबोला है फिर भी एक भावात्मक लगाव और प्रेम दोनों में दिखाई पड़ता है तभी तो पुत्र पिता की चिंता में रातभर सो नहीं पा रहा है। वह रातभर पिता के ही बारे में सोच रहा है। उसे दुख भी है, क्षोभ भी है कि घर में सभी कमरों में पंखे हैं फिर भी पिता इतनी गर्मी में बाहर पसीने से परेशान हो रहे हैं, सो नहीं पा रहे हैं किंतु वह आकर कमरे में नहीं सोते। पुत्र को क्रोध है पिता क्यों खुद को कष्ट दे रहे हैं – "अंदर कमरों में पंखों के नीचे घर के सभी दूसरे लोग आराम से पसरे हैं। इस साल जो नया पेडस्टल खरीदा गया है वह आंगन में दादी अम्मा के लिए लगता है। बिजली का मीटर तेज चल रहा होगा। पैसे खर्च हो रहे हैं, लेकिन पिता की रात कष्ट में ही है। लेकिन गजब यह नहीं है। गजब तो पिता की जिद है, वह दूसरे का आग्रह–अनुरोध माने तब ना। पता नहीं क्यों, पिता जीवन की अनिवार्य सुविधाओं से भी चिढ़ते हैं। वह झल्लाने लगा।"[3]

यहाँ पुत्र का झल्लाना, खीझना पिता के प्रति उसकी चिंता को व्यक्त करता है। उसे लगता है पिता क्यों नहीं उन सुविधाओं के साथ जीवन–यापन करते जिसे उनके पुत्र उन्हें देना चाहते हैं। पुत्र बड़े उत्साह एवं इच्छा से पिता के लिए श्रेष्ठतम उपहार लाना चाहते हैं लेकिन पिता उन चीजों से कोई लगाव नहीं दिखाते। लेखक कहते हैं उनके दादा भाई ने पिता के लिए अपनी पहली तनख्वाह से एक खूबसूरत शावर बाथरूम में लगाया, उन्हें लगा पिता खुश होंगे किंतु उन्होंने कोई उत्साह प्रकट नहीं किया यहाँ तक कि वे तो बाहर आंगन में ही नहाते हैं उस शावर का तो उपयोग ही नहीं करते। इस कारण पुत्रों में पिता को लेकर रोष उत्पन्न होता है– "वे पुत्र, जो पिता के लिए कुल्लू का सेव मंगाने और दिल्ली एंपोरियम से बढ़िया धोतियाँ मँगाकर उन्हें पहनाने का उत्साह रखते थे, अब तेजी से पिता विरोधी होते जा रहे हैं। सुखी बच्चे भी अब गाहे–बगाहे मुंह खोलते हैं और क्रोध उगल देते हैं।"[4]

कहानी का पात्र 'वह' जो अपने पिता के बारे में सोच रहा है वह अपने पिता के लिए एक कोट का बेहतरीन कपड़ा लाया। पहले तो पिता उसे लेने को तैयार नहीं हुए फिर जब माँ के काफी घुड़कने के बाद राजी हुए तो किसी सस्ते दर्जी के यहाँ सिलाने के लिए चल दिए। सबने कहा कि कपड़ा कीमती है आप अच्छी तरह अच्छी जगह चलकर नाप दिलवा दीजिए तो पिता मना कर

[illegible]

पिता का व्यक्तित्व क्रम से विराट होता जाता है। मध्यमवर्गीय परिवार में जहाँ पिता ने ज्ञान से संघर्ष देखा हो वह वृद्धावस्था में पुत्रों को व्यर्थ पैसे लुटाते तथा सुविधाभोगी बनकर पुत्रों को कष्ट में नहीं देख सकता। पिता अपने बच्चों को आधुनिक बनने से नहीं रोकते किंतु स्वयं आधुनिकता की चमक में शामिल नहीं होते। यही द्वंद्व पिता और पुत्र में रहता है। युवा पुत्र में जिद है, क्रोध है। यहीं से पिता-पुत्र में अलगाव भी दृष्टिगत होता है– 'अगर कोई [illegible]-युद्ध न होता पिता और पुत्रों के बीच तो वह उन्हें जबरन पथ्य के भीतर [illegible] देता। लेकिन उसे लगा कि उसका युवापन एक प्रतिष्ठा की जिद कहीं घुसा बैठा है। वह इस प्रतिष्ठा के आगे कभी बहुत मजबूर, कभी कमजोर हो जाता है और उसे भुगत भी रहा है।'

यही वह पुरानी और आधुनिक पीढ़ी का अंतर और उनके बीच का द्वंद्व है जो उनमें अलगाव उत्पन्न करता है। वृद्ध-विमर्श के दौर की वैचारिकी है [illegible] जहाँ पिता का घर के बाहर सोना पुत्र की प्रतिष्ठा के लिए अपमान का विषय [illegible]। उसे खीझ होती है पिता से, क्यों वह अपने को नहीं बदलते वर्तमान परिवेश [illegible] साथ– 'कई बार कहा, मोहल्ले में हम लोगों का सम्मान है, चार भले लोग [illegible] जाया करते हैं, आपको अंदर सोना चाहिए, ढंग के कपड़े पहनने चाहिए [illegible] चौकीदारों की तरह रात को पहरा देना बहुत ही भद्दा लगता है। लेकिन [illegible] की अकड़ में कभी कोई झोल नहीं आता। उल्टा-सीधा, पता नहीं कहाँ [illegible] दर्जी से कुर्ता-कमीज सिलवा लेते हैं। टेढ़ी जेब, सदरी के बटन ऊपर- [illegible] लगा, सभा-सोसाइटी में चले जाएंगे। घर भर को बुरा लगता है।'

यह आजकल हर घर की कहानी है। नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से हमेशा [illegible]पत्ति रहती है कि वह इस नए युग के साथ खुद को क्यों नहीं बदलता। [illegible]रण नई पीढ़ी को लगता है कि पुरानी पीढ़ी 'मिसफिट' होती जा रही [illegible] पीढ़ीगत अंतराल सदियों से चला आ रहा है। यहाँ एक बड़ा प्रश्न [illegible] आता है जो दोनों पीढ़ियों को समझना होगा कि आखिर दोनों को ही [illegible] को क्यों बदलना है? क्यों ना एक-दूसरे को वैसे ही स्वीकार करें

[illegible] जीने का तरीका उनका नितांत वैयक्तिक होना [illegible] है। उनके जीवन को जीने का [illegible] की आवश्यकता नहीं पड़े। यदि बुजुर्ग [illegible] किसी को भी किसी को बदलने की [illegible] छोड़े उसे अपने बच्चों पर न लादे तथा युवा पीढ़ी [illegible] अपनी रूढ़िवादिता को छोड़े [illegible] थोपे तो पारिवारिक विघटन तथा पीढ़ीगत [illegible] आधुनिकता बुजुर्गों पर न थोपे [illegible] बहुत हद तक कम हो सकता है। इसी संदर्भ में कमलेश्वर अपनी [illegible] नई कहानी की भूमिका में लिखते हैं– 'और बदले हुए यथार्थ के [illegible] यदि हम देखें तो नई यानी समकालीन कहानी में एक और वे पात्र हैं जो [illegible] प्रगाढ़ भारतीय संस्कार लिए जीवन के दृश्यपट से विलीन हो रहे हैं– [illegible] और उम्र के साथ मिटते हुए लोग– 'आर्द्रा की माँ', 'गुलरा के बाबा', [illegible] पिता, बुजुर्ग [illegible] 'चीफ की दावत' की माताजी, 'बिरादरी बाहर' के बाप, [illegible] के बाबा, [illegible] के पिता या 'पिता' के पिता और 'रक्तपात की माँ'।'

'पिता' कहानी का पुत्र पिता की मजबूरी भी समझता है, उनके स्वाभिमान [illegible] को भी मानता है किंतु पिता को सुख देने की आकांक्षा उसे क्रोधी बनाती है, [illegible] विद्रोही बनाती है। पर फिर भी वह पिता को, उसके आत्म-सम्मान को समझता [illegible] है। ज्ञानरंजन की भाषा कहानी में इस द्वंद्व को कितनी स्पष्टता से प्रकट करती [illegible] है– 'दरअसल उसका जी अक्सर चिल्ला उठने को हुआ है। पिता, तुम हमारा [illegible] निषेध करते हो। तुम ढोंगी हो, अहंकारी– बद्र अहंकारी! लेकिन वह चिल्ला[illegible] नहीं।... उसको लगा, पिता लगातार विजयी हैं। कठोर हैं तो क्या, उन्होंने पु[illegible] के सामने अपने को कभी पसारा नहीं।'

सचमुच ज्ञानरंजन की 'पिता' कहानी में एक पुत्र की नजर से पिता [illegible] त्याग, स्वाभिमान, संघर्ष तथा कठोरता के आवरण के पीछे छिपे परिवार के [illegible] प्रेम को दर्शाया है। पुत्र जो पिता से नाराज है। पर जानता है पिता ऊपर [illegible] कितना भी कठोर क्यों ना हो जाए, भीतर से पूरे परिवार के सुखों के लिए अ[illegible] खुशियों की आहुति देने वाले और अपने त्याग का बखान न करके पु[illegible] अपने स्वाभिमान के साथ जीवन निर्वाह करते हैं। पिता किसी को कहते [illegible] हैं फिर भी उन्हें सबकी चिंता है। इन सारी स्थितियों की समीक्षा लेखक ने [illegible] की नजरों से की है। वह पिता की मजबूरी से भी अवगत है– 'वह विषाद [illegible] हुआ और अनुभव करने लगा, हमारे समाज में बड़े-बूढ़े लोग जैसे बहू- [illegible] के निजी जीवन को स्वच्छंद रहने देने के लिए अपना अधिकांश समय [illegible] व्यतीत किया करते हैं, क्या पिता ने भी वैसा ही करना तो नहीं शुरू क[illegible] है? उसे पिता के बूढ़ेपन का ख्याल करके सिहरन हुई। फिर उसने [illegible] सोचा, पिता अभी बूढ़े नहीं हुए हैं। उन्हें प्रतिक्षण हमारे साथ-साथ जीवि[illegible] चाहिए, भरसक। पुरानी जीवन- व्यवस्था कितनी कठोर थी, उसके म[illegible] एक बिखराव आ गया।'

पुत्र पिता के प्रति असंतोष और सहानुभूति, दोनों के बीच असंतुलित महसूस करता है। इस प्रकार वृद्ध जीवन को युवा पीढ़ी के माध्यम से समझने का एक सकारात्मक प्रयास है 'पिता' कहानी। यह कहानी वृद्ध जीवन को नए संदर्भ में देखने का प्रयास है। वह पिता जो अपने अभावों, कष्टों को लेकर कभी मुखर नहीं होता, कभी शिकायत नहीं करता, सदैव कठोर बना रहता है। विशिष्ट रहता है जीवन की सुख-सुविधाओं से। अहंकारी, कठोर, दृढ़, जिद्दी बना रहता है। उसे लेखक ने पुत्र के माध्यम से मुखर बनाया है। पिता के संघर्ष, उसके स्वाभिमान, उसकी मितव्ययता, उसकी परिवार के प्रति चिंता, उसकी महानता को पुत्र के द्वारा समझना– यही भारतीय पारिवारिक जीवन की वह डोर है जो तमाम वैचारिक मतभेद के पिता और पुत्र के बीच एक प्रेमयुक्त और भावनात्मक संबंधों को बनाए रखती है। जो पिता और पुत्र के संबंधों का एक खुला आकाश बनाती है।

संदर्भ

1. डॉ. राम प्रसाद त्रिपाठी : हिंदी विश्वकोश, पृ. 203
2. ज्ञानरंजन : ज्ञानरंजन संकलित कहानियां, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत 2014
3. ज्ञानरंजन : पिता (ज्ञानरंजन संकलित कहानियां) राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 2014 पृ. 2
4. वही, पृ. 3
5. वही, पृ. 7
6. वही, पृ. 6
7. वही, पृ. 3–4
8. कमलेश्वर : नई कहानी की भूमिका , राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2015 पृ. 19
9. ज्ञानरंजन : पिता (ज्ञानरंजन संकलित कहानियां) राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 2014 पृ. 6
10. वही, पृ. 6

सहायक आचार्य, हिन्दी–विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)
मोबाइल नं. 9950960999
ई मेल : nkntrivedi@gmail.com